P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

राजस्थान में आदिवासी समुदाय का सषक्तिकरणः– बांसवाडा जिले की भील जनजाति के संदर्भ में

Empowerment of Trible Society in Rajasthan: In Context of “Bheel Trible” In Banswara District

वेद प्रकाश
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
झुन्झुनू, राजस्थान, भारत

सारांश

जीवन के दो पक्ष हैं भौतिक पक्ष तथा सामाजिक पक्ष। सामाजिक पक्ष हमें भौतिक सुखों से ऊपर उठाकर रीति रिवाजों, सहयोग, स्नेह एवं समपर्ण का अनुभव कराता है। यह सामाजिक पक्ष परम्परागत आस्थाओं और विश्वासों से बनता है। यह वह धरोहर है जो बाल्यकाल से ही पारिवारिक एवं सामाजिक संस्कारों के रूप में भावनाओं की नाना परतों से लिपट कर अचेतन मन की गहराईयों में स्थापित हो जाती है। इन आस्थाओं का रूपान्तरण तो सम्भव है परन्तु इनका जीवन की मूलधारा से विच्छेद सम्भव नहीं है।

भील जनजाति के परम्परागत रीति रिवाजों में प्रकृति के कोमल और कठोर रूप प्रतिबिम्बित हैं, लोक देवताओं के प्रति अगाध श्रद्धा हैं, त्योहारों का आमोद–प्रमोद है, लोक विश्वासों के रंगीन लुभावने चित्र हैं, लोक गीतों के मधुर स्वर की अनुगूँज है, रसीले नृत्यों की मनोहर थिरकन है, जीवन के सुख–दुःख की कहानियाँ हैं एवं स्वजनों के प्रति अमिट स्नेह और अनुराग है।

बांसवाड़ा जनजाति बहुल क्षेत्र है जिसमें सन 2011 में अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या की 56.28 प्रतिशत थी। इस क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के रूप में भील जनजाति निवास करती है। भील जनजाति में अंगारी, अहारी, कटारा, कलासुवा, कुड़िया, खराड़ी, चरपोटा, डाबी, डिण्डोर, डोडियार, ताबियार, निनामा, दामा, दायमा, परमार, पण्डोत, पारगी, भगोरा, राठोड़, मईड़ा, रेलावत, रोत, वराड़ा, सोलंकी, मकवाना, हिरोट, भूरिया, गेन्दोत, डामोर, सारेल, वडेरी, मसार, माल, भुज, सिंघाड़ा, खाँट आदि मुख्य गोत्र है।

मुख्य शब्द : बांसवाडा क्षेत्र, जनजाति महिला, गरीबी आय व्यय, सामाजिक लोक परम्परायें रिति रिवाज भील जनजाति, सामाजिक संगठन, जनजाति समाज, विवाह, आर्थिक सामाजिक विकास, सभ्यता संस्कृति, सशक्तिकरण।

प्रस्तावना

भील शब्द द्रविड़ भाषा के 'बील' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ 'कमान' से है। तीन कमान चलाने में निपुणता प्राप्त होने से सम्भवतः भील नाम रखा है। महाभारत में यह कहा गया है कि महादेव अस्वस्थ होने के कारण जंगल में वृक्षों की छाया में आराम कर रहे थे। अचानक एक सुन्दर स्त्री आई जिसके प्रथम दर्शन से महादेव के सब रोग दूर हो गये। दोनों में प्रेम हो गया एवं कई पुत्र पैदा हुए, जिसमें सबसे बड़ा पुत्र था। एक दिन पुत्र ने महादेव की सवारी वाले नादिये बैल को चुराकर मार डाला। इस घटना से शंकर भगवान क्रोधित हुए एवं इस लड़के की संतानों को दूर पर्वतीय एवं वनीय क्षेत्रों में निकाल दिया। भील जनजाति को पूर्व में पुलिन्द जाति, वनपुत्र एवं वनराज के नाम से पुकारते थे।

कर्नल टॉड कहते हैं कि भारत में भील बड़े दूरदराज क्षेत्रों से आये है। वे देश के सबसे पुराने वाषिन्दे है। ऐसा लगता हैं कि ईसा से कई वर्षो पूर्व से ये उत्तर एवं उतरी पूर्वी देशों से यहाँ आये थे। इन्हें जंगलों एवं पहाड़ों में खदेड़ने का कार्य आर्य आक्रमणकारियों ने किया। जंगल में रहने के कारण टॉड ने भील जनजाति को वनपुत्र के नाम से पुकारा है। भीलों के प्राचीन उद्गम की खोज करते हुए कर्नल टॉड लिखते हैं : ''भील जाति भारतवर्ष में लम्बे समय से रहती आ रही हैं इस जाति के गुण, स्वभाव एवं रहन–सहन से यही प्रकट होता है कि ये देश के आदिम निवासी हैं।''

"The very essence of the Bhils is their location in the forest, Jungle and mountains. Their political independence, their social organization and some extent their identity were largely caused by their geographical isolation."[1]

बढ़ता जनसंख्या दवाब, कृषि भूमि की खोज, राजपूत शासकों का आक्रमण, हिन्दू जातियों का प्रवास एवं व्यापारियों से सम्पर्क ने भील जनजाति को पहाड़ियों से नीचे की ओर धकेला। मेवाड़ स्टेट में भील जनजाति का विषेष महत्व रहा। तीन कमान एवं वनीय जीवन ने भील जनजाति के व्यक्तियों को निर्भय योद्धा बनाया। मेवाड़ स्टेट के महाराणा का राजतिलक उस समय तक सम्पन्न नहीं माना जाता जब तक भील सरदार अपने खून के अंगूठे से तिलक नहीं लगा देता।

सामाजिक संगठन

बांसवाड़ा में भील जनजाति के घर आयताकार आकृति में होते हैं जिनका निर्माण समूह के रूप में न किया जाकर अलग–अलग खेत खलिहानों पर या असमतल भूमि पर करते है। इनके घरों को स्थानीय भाषा में 'टापरा' शब्द से सम्बोधित करते है।

''भील जनजाति का टापरा (आवास) बिखरे हुए रूप में पाये जाते हैं 1 अग्निकाण्ड से बचने के लिए, 2. जादू टोने के प्रभाव से बचने के लिए, 3 छुआछूत एवं महामारी से बचने के लिए 4. अपनी स्त्रियों को अन्य लोगों के सम्पर्क में आने से रोकन के लिए ताकि परिवार न टूटे। चूँकि इनकी स्त्रियाँ विवाह के बाद भी पर पुरूष के साथ पलायन कर विवाह कर लेती है। जिसकों समाज भी झगड़ा चुकाने के बाद वैद्य मान लेता है।''[2]

बांसवाडा में भील जनजाति वर्ग के व्यक्तियों के मानव अधिवास बिखरे हुए एवं अपखण्डित रूप में पाये जाते हैं, वहीं सामान्य जातियों के साथ सघन मानव अधिवासों में भी निवास करते है। सामान्यतः बिखरे हुए एवं अपखण्डित मानव अधिवासों मे ंजनजाति समुदाय का एक परिवार एवं उसके निकट सम्बंधी निवास करते है। कुछ समय पूर्व तक भील जनजाति के सामाजिक संगठन में भाँजगड़िया का विषेष महत्व रहता था। भाँजगड़िया जनजाति वर्ग का एक समझदार व्यक्ति होता है, जो शादी के समय महुड़ी पीकर झगड़ा करने से उत्पन्न विवाद, जमीन का विवाद एवं दो भाईयों में विवाद का निपटारा करता है, वहीं बस्ती की लड़की भगाकर ले जाने पर झगड़ा राषि का निष्चय भी करता है तथा औरत से सम्बंधित अन्य विवादों का निपटारा भी करता है। माही सिंचित क्षेत्र में बढ़ रही शिक्षा के कारण से इस वर्ग के लोगों ने भाँजगड़िया के निर्णयों पर अंगुली उठाना प्रारम्भ कर दी है। जनजाति बस्ती की राजनीति (सरपंच का चुनाव), जनजाति सरकारी सेवा वर्ग एवं सामान्य जातियो के सम्पर्क के कारण से वर्तमान समय में जनजाति वर्ग के व्यक्तियों के मध्य उठने वाले छोटे–छोटे झगड़े पुलिस एवं कोर्ट में पहुँचने प्रारम्भ हो चुके हैं, जहाँ पर इनका आर्थिक एवं दैहिक शोषण होता है। भाँजगड़िया के साथ–साथ जनजाति सामाजिक संगठन में ढोली (ढोल बजाने वाला) एव ंनाण या दोयण (परिचारिका) का भी विषेष महत्व होता है।

भील जनजाति वर्ग के सामाजिक संगठन में गोत्र व्यवस्था का विषेष महत्व रहता है। भील जनजाति में अनेक पितृवंषीय गोत्र होते हैं जो बहिर्वैवाहिकी समूह होते है। इन्हें अटक कहते है। अटक का अर्थ हैं किसी एक पूर्वज से उत्पति। इसके अनुसार एक ही अटक के भील परस्पर रक्त सम्बंधी होते है। इसी कारण एक रक्त समूह में विवाह नहीं होते है। प्रत्येक गोत्र का अपना टोटेम (खतरी) अर्थात् कुल देवता होता है। जनजाति वर्ग के गोत्रों का टोटेम पेड़, पौधा, पषु–पक्षी आदि होता है। टोटेम को भील जनजाति कठिन परिस्थिति, बीमारी, पारिवारिक दुर्घटना आदि में याद करते है। उनकी मान्यता है कि टोटेम उनकी सुरक्षा करता है। कटारा, खराड़ी, परमार, निनामा एवं डामोर का टोटेम क्रमशः मालो, अम्बाव, पीपल हेण, थुर एवं कन्यालों है।

पारिवारिक संरचना

भील जनजाति एकाकी परिवार को पसंद करती है, जिसमें पति, पत्नी एवं अविवाहित बच्चे रहते है। वे सामान्य जातियों की भाँति संयुक्त परिवार में विश्वास नहीं करते है। जैसे ही वयस्क पुत्र की शादी हो जाती हैं, वह अपने माता–पिता से अलग हो जाता हैं। लड़के का पिता अलग से 'टापरा' बनाकर नवविवाहित पुत्र को देता है, जहाँ पर वे अपने दाम्पत्य जीवन का आनन्द ले सकें। 'टापरा' के साथ लड़के का पिता अपनी जमीन में से कुछ हिस्सा पुत्र को देता है, जिस पर वह अपनी आजीविका कमा सकें। भूमि का यह विखण्डन उस समय तक होता है, जब तक सबसे छोटे पुत्र की शादी नहीं कर दी जाती है। परिवार का मुखिया पिता होता है। पिता की अनुपस्थिति में परिवार का सबसे बड़ा पुरूष सदस्य मुखिया होता है।

भील जनजाति समाज में माता–पिता सबसे छोटे पुत्र के साथ रहते है। भील जनजाति के व्यक्ति संयुक्त परिवार की बजाय एकाकी परिवार को अधिक सुविधाजनक मानते हैं क्योंकि इस एकाकी परिवार में सामान्य जातियों में होने वाले झगड़े नहीं होते हैं, वहीं एकाकी परिवार में रहकर जनजाति महिला अधिक स्वतंत्रता का आनन्द ले सकती है। जनजाति महिला पुरूषों के साथ खेतों में कार्य करने के साथ मजदूरी करने भी जाती है। वह हाट, त्योहारों एवं अन्य उत्सवों पर स्वतंत्रतापूर्वक भाग ले सकती है। वर्तमान में माही सिंचित क्षेत्र में जनजाति महिलाओं में सामान्य जातियों के सम्पर्क के कारण पर्दा प्रथा का प्रचलन बढ़ रहा हैं, लेकिन यह पर्दा प्रथा ससुर एवं जेठ तक सीमित है एवं पर्दे में रहकर ससुर एवं जेठ से बातचीत कर सकती है। पर्दा प्रथा शादी के बाद कुछ वर्षो तक ही सीमित रहती है।

भील समाज एक पत्नी विवाह को पसंद करता हैं, लेकिन विकसित जनजाति व्यक्तियों में बहुपत्नी विवाह को देखा जा सकता है क्योंकि शादी का आधार 'दापा– (कन्या मूल्य) हैं जिसे समृद्ध जनजाति व्यक्ति ही सहन कर सकता है।

अतः भील समाज में बहुपत्नी विवाह कन्या मूल्य द्वारा सीमाबद्ध किया है क्योंकि एक औरत प्राप्त करने के लिए बड़ी राषि अदा करनी पड़ती है, जिसे जनजाति समाज का सामान्य व्यक्ति अदा नहीं कर सकता। समृद्ध

जनजाति व्यक्ति औरत को एक सम्पति के रूप में मानता है। अधिक पत्नी होने पर समाज में अधिक सम्मान प्राप्त होता है।

सामाजिक परम्पराएँ

भील जनजाति की सामाजिक संरचना सामुदायिक भावना एवं प्राथमिक सम्बंधों पर आधारित होने के कारण सुदृढ़ एवं एकता के सूत्र में बंधी हुई होती है। इनमें परस्पर सहयोग एवं सहानुभूति की भावना होती है। ये इसकी प्रतिष्ठा को स्वयं की प्रतिष्ठा समझाकर हर कीमत पर रक्षा का प्रयास करते हैं तथा समाज के रीति रिवाजों से अंतरंग रूप से जुड़े एवं बंधे हुए रहते है।

"The status of village is eventually the status of the individual."[3]

भील जनजाति हिन्दू धर्म से सम्बंधित हैं एवं भारत के अन्य क्षेत्रों में मनाये जाने वाले त्योंहार एवं उत्सवों की तरह जनजाति के व्यक्ति मनाते है। भील जनजाति के व्यक्ति बच्चे के जन्म को बड़े उत्साह से मनाते है। इस वर्ग के समाज में लड़का एवं लड़की में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता हैं एवं लड़की के जन्म पर बड़े ही खुष होते हैं क्योंकि लड़की की शादी के समय पिता को वरपक्ष की तरफ से कन्या मूल्य (दापा) प्राप्त होता है। बच्चे के जन्म से 7 दिन बाद सूरज पूजन के रूप में माता एवं बच्चे को स्नान कराया जाता हैं एवं पड़ौसियों एवं नजदीक रिष्तेदारों के लिए खाना एवं महुड़ी की व्यवस्था करनी पड़ती है।

माही सिंचित क्षेत्र में भील जनजाति में नामकरण एवं मुण्डन संस्कार की सामाजिक परम्पराएँ भी देखी जा सकती है। अतः इस क्षेत्र में भील जनजाति पर सामान्य जातियों के प्रभाव को देखा जा सकता है। इस वर्ग के व्यक्ति सामान्य जातियों की संस्कृति के निकट आ रहे हैं एवं अधिकांष रीति–रिवाज सामान्य जातियों के अपना रहे है। भील जनजाति सामान्य जातियों के रीति–रिवाज अपनाये जाने के बाद भी जनजाति समाज की नातरा, नोतरा, दापा एवं बाल विवाह की परम्पराएँ वर्तमान समय तक अस्तित्व में बनी हुई है।

दापा – भील जनजाति समाज में वैवाहिक सम्बंध स्थापित करने के लिए वरपक्ष एवं कन्यापक्ष के मध्य समझौते के द्वारा एक निष्चित राषि कन्या मूल्य के रूप में लड़की के पिता को दी जाती हैं, जिसे दापा के नाम से पुकारते है। भील जनजाति समाज में दापा वैवाहिक सम्बंधों का आधार हैं एवं वैवाहिक सम्बंध टूटने पर पति को दापा (कन्या मूल्य) प्राप्त करने का अधिकार होता है।

''लड़की के माता–पिता उसके पालन पोषण के बदले में विवाह के समय उसका मूल्य प्राप्त करते है। इसका एक पहलू यह भी है कि कन्या मूल्य पिता के परिवार में कन्या की आर्थिक उपादेयता का प्रतीक है तथा जिसके विवाह में दिये जाने पर वे आर्थिक क्षति के हकदार बन जाते हैं।''[4]

लड़की का पिता जल्दी दापा प्राप्त करने के लिए लड़की की शादी कम उम्र में करने के लिए तैयार हो जाता है, जिसके कारण से बाल विवाह की प्रवृति बढ़ती है। वरपक्ष दापा की व्यवस्था करने के लिए अपने आर्थिक संसाधनों को गिरवी रखकर सर्राफ या सेठ साहूकारों से कर्ज लेता है। इस कर्ज पर प्रतिमाह ब्याज प्रति सौ रूपये पर 5 रूपये तक होता है अर्थात् 60 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर कर्ज प्राप्त करता है। जापान एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्याज दर 3 प्रतिशत वार्षिक से कम है। इस कर्ज के कारण वरपक्ष गरीबी की ओर बढ़ने के साथ–साथ आर्थिक संसाधनों को गिरवी रखने के कारण बेकारी की ओर बढ़ता है।

नातरा

विधवा, परित्यक्ता या विवाहित स्त्री का किसी अन्य व्यक्ति के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित करना नातरा कहलाता है। प्रत्येक स्थिति में नातरा के साथ दापा जुड़ा रहता है। यदि पति को छोड़कर विवाह किया जाता है, तो भाँजगड़ियों द्वारा निर्धारित रकम दूसरे पति द्वारा पहले पति को दी जाती है।

नोतरा

विवाह के समय या अन्य मांगलिक कार्यो के समय भील जनजाति समाज में जातिगत लोगों द्वारा सम्बंधित पक्ष को वस्तु या धनराषि के रूप में तिलक करके आर्थिक सहायता की जाती है जिसे नोतरा के नाम से पुकारते है। भील जनजाति के व्यक्ति नोतरा देने के समय सभी कार्य छोड़कर नोतरा रखने वाले व्यक्ति के टापरा तक पहुँच जाता है।

भील जनजाति के प्रमुख व्यक्तियों (भांजगड़ियों) के द्वारा नोतरा गिराने की तिथि तय करने के बाद नोतरा गिराने वाला व्यक्ति अपने बहनोई या रिष्तेदारों के साथ पीले चावल लेकर गाँव वालों, मिलने वालों तथा रिष्तेदारों को निमंत्रण देता है, जिसमें वह नोतरा की तिथि व स्थान के बारे में बता देता है। नोतरा प्रथा एक व्यवस्था के रूप में सम्पूर्ण जनजाति समाज में व्याप्त है। सामाजिक सहयोग की व्यवस्था के रूप में नोतरा प्रथा प्राचीन समय से चली आ रही है जो किसी भी आर्थिक समस्या से उबरने का अच्छा तरीका है। नोतरा अलग–अलग समय व परिस्थितियों में गिराया जाता हैं जैसे टापरा बनाने, झगड़ा भरने तथा शादी करने के लिए।

ळलमा

हलमा भील जनजाति समाज में एक विषिष्ट परम्परा है। इस सामाजिक परम्परा के अनुसार पुत्र विवाह के बाद माता पिता से अलग रहकर गृहस्थ जीवन प्रारम्भ करता है जिसके लिए अलग आवास की आवश्यकता होती है। समाज के सहयोग से उसके लिए एक नये टापरा का निर्माण करते है। इस तरह सामुदायिक सहयोग से गृह निर्माण की यह सामाजिक परम्परा हलमा कहलाती हैं जिसमें एक ओर पुत्र को स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और दायित्वपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा है तो दूसरी ओर यह अहसास भी समाया है कि जिस टापरा में उनके सपने परवान चढ़ते है उसका एक–एक तिनका परिजनों एवं समाज के लोगों ने सजाया है। सामाजिक दायित्व उन्हें प्रतिपल बांधे रखता है। व्यक्ति एवं समुदाय का यह परस्पर सम्बंध हमारी सभ्यता का प्राण तत्व है। 'हलमों करवू है' (हलमा करना है) की हांक पड़ी नहीं कि जुट गया सारा भील समुदाय और फिर घर बनाना हो या खेत जोतना या फिर कोई अन्य आयोजन पारस्परिक सद्भाव

का जो दृष्य दिखाई देता हैं, वह अभिभूत कर देने वाला होता है।

पामणा

बांसवाडा के जनजाति समाज में पामणा गोरवषाली परम्परा है। पामणा विषेषकर होली, दीपावली तथा रक्षा बंधन के त्योहारों पर देखने को मिलता है। होली जनजाति समाज का उल्लास का त्योहार माना जाता है। इस अवसर पर फाल्गुन का माह रहता है जिसमें ढूँढ (होली के अवसर पर ननिहाल पक्ष वाले लड़का होने पर पोषाक लेकर आते हैं।) के पामणा विषेष महत्व के होते है। फाल्गुन माह जनजाति व्यक्तियों के लिए विषेष महत्व का होता है। इसमें वे कुछ नषे में मधुर धुन में फाल्गुनी गीत गाते, नृत्य करते हुए पामणे जाते है। खाना–पीना तथा गाना–बजाना एवं मस्त रहना इस अवसर की विषेषता है। यह बाल–किषोर से लेकर वृद्ध तथा बालिका से वृद्ध महिला तक का मस्ती व उल्लास का समय रहता है।

वार

भील जनजाति समाज में पारस्परिक सहयोग व सुरक्षा की भावना देखने को मिलती है। वार शब्द एक सामूहिक सुरक्षा भाव की व्यंजना कराता है। जनजाति समाज में टापरा बिखरे हुए रूप में होते हैं, जिससे सुरक्षा की समस्या रहती है। जनजाति समाज में वार एक सुदृढ सुरक्षा का प्रतीक है क्योंकि चोरी, आगजनी या आकस्मिक विपत्ति में एक व्यक्ति विषेष प्रकार की आवाज या ढोल बजाकर आस पास के टापरों को सूचना दे देता हैं जिससे सभी टापरों के व्यक्ति वार के स्थान को ध्यान में रखकर उस ओर अपने–अपने साधन–हथियार लेकर दौड़ते है। चोरी जैसी समस्या तो जनजाति बस्तियों में नही ंके बराबर है क्योंकि शातिर से शातिर चोर भी वार के द्वारा पकड़े जाते हैं तथा क्रुद्ध जनजाति व्यक्ति के द्वारा उनका क्या परिणाम होता है? यह तो हर कोई व्यक्ति जानता है। कैसी भी विपत्ति में ये सहयोग देकर उस व्यक्ति की मदद करते है। इस तरह वार एक सहयोग की अपील का नाम है। यह व्यवस्था प्राचीन समय में विशेषकर प्रचलित थी जिसमें जनजाति व्यक्तियों को घने जंगलों के हिंसक जानवरों व लुटेरों से सुरक्षा करनी पड़ती थी। जो आज तक परम्परा के रूप में जनजाति समाज में विद्यमान है।

नृत्य

भील जनजाति के व्यक्ति नृत्य एवं गानों को बहुत अधिक चाहते है। जनजाति समाज में पुरूष एवं स्त्री एक साथ मिलकर परम्परागत नृत्य करते हैं एवं नृत्य अनोखा एवं आनन्द से भरपूर होता है। माही सिंचित क्षेत्र में भील जनजाति गेर, नृत्य करते है। होली के अवसर पर 10 दिनों तक महुड़ी (देशी शराब) का प्रयोग करके लोकनृत्यों का आनन्द लेते है। नृत्य के दौरान वे परम्परागत संगीत यंत्रों जैसे ढोल, कुण्डी, थाली आदि का प्रयोग करते है। मुख्य रूप से गेर नृत्य, नेजा नृत्य, बारया नृत्य, राठ्या नृत्य तथा गरबा नृत्य किया जाता है।

मनोरंजन के सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ लोकनृत्य जनजाति समाज की संस्कृति को भी दर्शाता है। वर्तमान समय में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप संगीत यंत्रों एवं नृत्यों में परिवर्तन हो रहा है।

त्योहार एवं मेले

बांसवाड़ा में सामान्यतया हिन्दू जातियों के जो तिथि–त्योहार और मेले हैं, वे ही भील जनजाति के तिथि–त्योहार और मेले है। जनजाति के व्यक्ति आखातीज, रक्षा बंधन, आमली ग्यारस, नवरात्रा, दीपावली और होली मनाते है। यह संभव है कि होली एवं दीपावली पर हिन्दू जातियाँ मिष्ठान्न बनाती है और इन अवसरों पर जनजाति के व्यक्ति मांस तथा मदिरा का सेवन करते है। जनजाति लोगों का होली मुख्य त्यौहार है जिसे बड़ी खुषी से मनाया जाता है। होली के उपरान्त एक सप्ताह से अधिक समय तक लोकनृत्य एवं गाने चलते रहते है। भील जनजाति देवी काली की पूजा अर्चना करते है। अतः नवरात्रि में नौ दिन तक देवी काली की स्तुति में गाने एवं नृत्य चलता रहता है।

दक्षिण राजस्थान के जनजाति क्षेत्र में अनेक छोटे बड़े मेले लगते है। कुछ मेले ऐसे हैं, जिन्हें मुख्यतया भील जनजाति के मेले कह सकते है। ऐसे मेलों में सबसे बड़ा मेला बेणेष्वर धाम का है। बेणेष्वर धाम सोम एवं माही के संगम पर स्थित है जहाँ पर प्रति वर्ष माघ पूर्णिमा को मेला लगता है। इस मेले में भील जनजाति के व्यक्ति मुख्यतः शामिल होते है। विगत वर्ष के दौरान हुए मृत व्यक्तियों की अस्थियों का विसर्जन इस अवसर पर माही नदी के जल में होता है। दूसरा महत्वपूर्ण मेला घोटिया अम्बा का है जो चैत्रवदी अमावस्या को लगता है जहाँ पर दूर–दूर तक के भील जनजाति के व्यक्ति सम्मिलित होते है।

घोड़ी रणछोड़ मेला मोटा गाँव में आष्विन नवरात्रि प्रथम रविवार, कलाजी का मेला गोपीनाथ का गढ़ा में प्रथम रविवार नवरात्रि, दषहरा मेला बाँसवाड़ा में आष्विन सुदी नवरात्रि, मानगढ़ धाम मेला आनन्दपुरी के निकट शरद पूर्णिमा, शिवरात्रि का मेला मदारेश्वर बाँसवाड़ा में शिवरात्रि, नवरात्रि मेला काली कल्याणधाम बाँसवाड़ा में अष्टमी के दिन लगते है। इस जनजाति क्षेत्र में प्रत्येक वार को अलग–अलग स्थान पर हाट लगता है जहाँ पर जनजाति व्यक्ति आवश्यक सामान क्रय करने के साथ–साथ रिष्तेदारों एवं दोस्तों से भी मिल लेता है। हाट में जनजाति युवक एवं युवतियाँ स्वतंत्र रूप विचरण करते हैं एवं भावी जीवनसाथी के चयन की शुरूआत करते हैं।

जनजाति नारी की स्थिति

''वागड़ अंचल के भील जनजाति समाज मे स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक है। उसे जीवनसाथी चयन करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। वह विवाह पूर्व जीवन साथी का परिचय व परीक्षण करती है। इसके लिए बाजार, हाट या मेले में विचरण कर वह अपना वर ढूंढ़ती है। इसके लिए उस पर सारे दिन और देर रात तक भी आने जाने की कोई रोक टोक नहीं होती है। यदि किसी लड़के को उसके घरवाले पसंद कर विवाह करना चाहे परन्तु लड़की को वर पसंद नहीं हो तथा वह सहमति न दे, तो विवाह संबंध नहीं हो सकता है।''[5]

जनजाति समाज में बालिका के जन्म को हिकारत की दृष्टि से नहीं देखा जाता है तथा जनजाति नारी की सामाजिक सांस्कृतिक हैसियत सामान्य जातियों के लिए आदर्ष मानी जा सकती है। न तो दहेज के लिए

दानव का षिकार होना पड़ता है एवं न ही बाल विधवा के अभिषाप से जीवनभर जलने की आवश्यकता है, लेकिन फिर भी अशिक्षा, कुपोषण तथा प्रसवकालीन मृत्युदर के मानदण्डों पर जनजाति महिलाओं की व्यथापूर्ण स्थिति उनकी सामाजिक सांस्कृतिक श्रेष्ठता पर करारा व्यंग्य है। गरीबी तथा अशिक्षा में सीधा सह संबंध है। जनजाति महिलाएँ आर्थिक अभावों से परिपूर्ण अस्वाथ्यकर वातावरण में अनैच्छिक मातृत्व के बोझ को वहन करते हुये बाल मृत्युदर तथा प्रसव मृत्युदर की विभीषिका से पीड़ित है। वर्तमान समय में माही सिंचित क्षेत्र में हो रहे आर्थिक एवं सामाजिक विकास के कारण मृत्युदर में कमी आ रही है। राज्य के जनजाति विकास नियोजन के आर्थिक कार्यक्रमों से शैक्षणिक एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है। संचार माध्यमों की क्रांति ने जनजाति महिला को भारतीय सामाजिक जीवन तथा उपभोक्तावाद की मुख्यधारा के निकट लाकर छोड़ दिया है।

लिंगानुपात

सन् 2011 में राजस्थान में लिंगानुपात 928 था वहीं बांसवाड़ा ग्रामीण क्षेत्र में सन् 2011 में लिंगानुपात 979 रहा। बांसवाड़ा के जनजाति समाज मे चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, जनजाति, व्यक्तियों के सामान्य जातियों के सम्पर्क के कारण एवं महिलाओं का जोखिमपूर्ण कार्यों में संलग्न होने के कारण लिंगानुपात कम हो रहा है।

शिक्षा का स्तर

सन् 2011 में राजस्थान राज्य में पुरुष साक्षरता एवं महिला साक्षरता क्रमशः 79.19% एवं 52.12% थी, वहीं बांसवाड़ा में सन् 2011 में पुरुष साक्षरता एवं महिला साक्षरता दर क्रमशः 76.01% एवं 47.83% रही। बांसवाड़ा मे हो रहे आर्थिक एवं सामाजिक विकास के कारण महिला साक्षरता दर निरन्तर बढ़ रही है।

स्वास्थ्य स्थिति

जनजाति महिलाओं की स्वास्थ्य की स्थिति दयनीय है जिसके निम्नलिखित कारण हैं– 1. गरीबी के कारण पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं हो पाता है, 2. अषिक्षिता एवं बिखरा अधिवास प्रतिरुप के कारण जनजाति महिलाएँ स्वास्थ्य सम्बंधी सूचनाओं से वंचित रहती है। 3. प्रजनन की बार बार पुनरावृति, एवं असुरक्षित प्रजनन मृत्यु का कारण बन जाता है।

सामान्य जातियों के सम्पर्क के कारण भोजन आदतें परिवर्तित हो रही है। जैसे मांस एवं मदिरा छोड़कर शाकाहारी भोजन करने लग गये है। शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से विकसित परिवारों की महिलाएँ स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक सचेत हो रही हैं।

सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति

जनजाति की महिलाए सामान्य जाति की महिलाओं से उच्च स्थिति रखती है, जिसके निम्नलिखित कारण है–

(अ) बच्ची पैदा होना अशुभ या शोक का विषय नहीं है एवं बच्ची एक सम्पति के रुप में मानी जाती है–
(i) प्रारम्भ से शारीरिक श्रम प्रदान करती है,
(ii) श्रमिक के रुप में कार्य करने से परिवार की आय बढती है, (iii) दापा (वधू–मूल्य) मे पैसा दिलवाती है, (iv) पिता की कृषि भूमि में हिस्सा नहीं लेती है, (v) शादी के समय वित्तीय अनुग्रह नहीं करना पड़ता है।

(ब) दहेज प्रथा का अभाव जनजाति महिला की सामाजिक– सांस्कृतिक स्थिति को बढ़ाता है लेकिन वर्तमान में शिक्षित व्यक्ति इसकी चपेट में आ रहे हैं।

(स) जनजाति लड़की जीवन साथी चयन की अधिक स्वतंत्रता रखती है। प्यार के द्वारा शादी जनजाति लड़की को अनौपचारिक शादी की सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सहायता करती है।

(द) तलाक देना कठिन नहीं है। निर्दयता, शारीरिक अक्षमता एवं पुरुषत्वहीनता के कारण यदि जनजाति महिला दूसरे वर को प्राप्त कर लेती है, उस समय दूसरे पति को पहले पति को झगड़ा चुकाना पड़ता है, जिसका निर्धारण भाँजगड़िये करते है।

(य) विधवा विवाह समाज द्वारा स्वीकृत है। जनजाति महिला स्वयं के देवर के साथ शादी कर सकती है।

पारिवारिक स्थिति

1. परिवार के आर्थिक निर्णयों में महत्वपूर्ण योगदान, 2. अन्य समाजों के समान पति अधिक प्रभावपूर्ण स्थिति में है, 3. पारिवारिक विवाद (अन्य व्यक्ति से अवैधानिक यौन संबंध, तलाक, अन्य शादीशुदा औरत से प्यार) समाज की पंचायत के पास आते है, जहाँ पर भाँजगडिये निर्णय करते है, 4. औरत को इस प्रकार के निर्णयों को मानना पड़ता है। ऐसे निर्णयों के समय वृद्ध महिला संबधित महिला की राय से पंचायत को अवगत कराती है। 5. लड़के की शादी के साथ ही जोड़े को अलग टापर में रहने की अनुमति मिल जाती है एवं गृहस्थी की जिम्मेदारियों को निभाना शुरु कर देते हैं।

विकास का जनजाति महिला पर प्रभाव

1. संकट के समय जनजाति औरत प्रवासी श्रमिक बन गई है जो ठेकेदारों के हाथों में यौन शौषण के चंगुल मे फंस जाती है, 2. गरीबी आधारित वेष्यावृति नगरों एवं कस्बों के निकटवर्ती क्षेत्रों एवं सड़क के किनारे वाले गाँवों में फैल रही है। 3. सामान्य जातियों के सम्पर्क के कारण परम्परागत हिन्दू समाज के रीति रिवाजों को ग्रहण कर रहा है। (भोजन आदते, शादीगत परम्पराएँ एवं जीवन स्तर) जिससे सामाजिक–सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है एवं उपभोग प्रतिरुप बदलने के कारण अनावष्यक बाजार वस्तुएँ ग्रहण कर रही है, जो पहले प्रकृति पर निर्भर थी, वह अपनी दयनीय आर्थिक स्थिति के बावजूद भी बाजार की तरफ आकर्षित हो रही है, जिससे वह महाजन वर्ग के हाथों में कठपुतली बनती जा रही है। 4. विकास के कारण जनजाति क्षेत्र में इस समाज में संगठन के बजाय बिखराव अधिक हुआ है, जिसने जनजाति महिला की स्थिति को अधिक दयनीय बना दिया है। 5. जनजाति समूह के ही प्रभावपूर्ण व्यक्ति अन्य जनजाति व्यक्तियों का शोषण अधिक कर रहे है।

राजनीतिक संस्थाओं एवं सरकारी सेवाओं में आरक्षण के कारण माही सिंचित क्षेत्र मे जनजाति महिलाएँ निरन्तर विकास कर रही है। विकास की गति धीमी है, लेकिन सकारात्मक है। शिक्षित जनजाति महिलाएँ विभिन्न

क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है एवं शिक्षित जनजाति महिला की समाज में स्थिति अच्छी है।

व्यावसायिक संरचना

आदिकालिन अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रुप से आदिम लोगों की जीविका पालन से सम्बंधित है। आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करना, उनका वितरण एवं उपभोग करना ही उनकी आर्थिक क्रियाओं का आधार है। आर्थिक क्रियाएं भौगोलिक पर्यावरण द्वारा प्रभावित होती है। अतः जीविकोपार्जन के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। आर्थिक जीवन संघर्षमय होने के कारण आर्थिक क्षेत्र में प्रगति धीमी होती है। आदिकालीन अर्थव्यवस्था प्रकृति की शक्तियों एवं प्राकृतिक साधनों फल फूल, पशु, पक्षी, पहाड़, घाटी, नदी तथा जंगलों पर निर्भर रही है तथा प्रकृति द्वार प्रदत्त सामग्री से उपकरणों का निर्माण करता है। भील जनजाति वनवासी रही है एवं पर्यावरण से स्वाभाविक सम्बंध स्थापित किये हैं। टापरे एवं औजारों के लिए मुफ्त लकड़ी मिल जाती है, तीर कमान से वन में षिकार कर मांस मछली प्राप्त कर लेते हैं।

भील जनजाति का आर्थिक जीवन व्यवस्थित नहीं है। समय के अनुसार बांसवाडा जनजाति व्यक्तियों की अर्थव्यवस्था मे निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। बांसवाडा में जनजाति व्यक्ति जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर है। सन् 2018–19 चयनित 1000 ग्रामीण जनजाति परिवारों के अध्ययन के आधार पर निम्न तालिका बनाई गई है।

सारणी 1.1

भील जनजाति की व्यावसायिक संरचना (2018–19)

(चयनित 1000 ग्रामीण जनजाति परिवारों के आधार पर)

व्यावसाय	कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत
1. कृषि	64.9
2. श्रमिक	16.4
3. मछली, पालन, शिकार एवं एकत्रीकरण	1.4
4. घरेलू उधोग	3.7
5. व्यापार एवं वाणिज्य	2.3
6. अन्य सेवाओं	11.3
योग	100

स्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, जून 2018 से दिसम्बर 2019 तक

चयनित 1000 ग्रामीण जनजाति बांसवाडा के अलग–अलग भागों में स्थित है तथा अंतिम केन्द्रीयता सूचकांक के आधार पर मानव अधिवासों के तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम पदानुक्रम स्तर के मानव अधिवासों में स्थित हैं। इस अध्ययन के आधार पर 64.9% जनसंख्या जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर आधारित है। इसमें कृषक के साथ साथ पशुपालन एवं कुक्कुट पालन शामिल है। 16.4% जनसंख्या श्रमिक है, इसमें कृषि श्रमिक, रोजनदारी खेती मजदूर, कमदारी या वरसूदिया खेती मजदूर, पशु चरवाही मजदूर, निर्माण कर्य एवं खनन क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिक तथा कस्बे या नगर में घरेलू कार्य करने वाले श्रमिक है। जनजाति गरीब व्यक्तियों के पास कृषि भूमि कम होने के कारण मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करते है। 1.4% जनसंख्या मछली पालन, षिकार एवं वन्य उपजों का एकत्रीकरण में सलंग्न है, जो भील जनजाति के परम्परागत व्यवसाय है। घरेलू उधोगों जैसे सिलाई का कार्य, बाँस की टोकरी का निर्माण, मटका निर्माण का कार्य आदि में 3.7% जनसंख्या संलग्न है। माही सिंचित क्षेत्र में जनजाति व्यक्तियों में हो रहे सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कारण 2.3% जनसंख्या व्यापार एवं वाणिज्य में एवं 11.3 जनजाति जनसंख्या सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाओं में संलग्न है।

आय संरचना

चयनित ग्रामीण जनजाति के 1000 परिवारों की आय सरंचना से स्पष्ट होता है कि 56.6ः परिवारों की प्रति माह प्रति व्यक्ति आय 1000 रुपये से कम है।

सारणी 1.2

भील जनजाति की आय सरंचना (2018–19)

(चयनित 1000 ग्रामीण जनजाति परिवारों के आधार पर)

प्रतिमाह प्रति व्यक्ति आय (रुपये में)	कुल परिवारों का प्रतिशत
1000 से कम	30.4
1000 से 2000	26.2
2000 से 3000	20.3
3000 से 5000	15.6
5000 से अधिक	7.5
योग	100 %

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, जून 2018 से दिसम्बर 2019 तक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 30.4% परिवारों की प्रतिमाह प्रतिव्यक्ति आय 1000 रुपये से कम है। वहीं 7.5% परिवारों की प्रतिमाह प्रति व्यक्ति आय 5000 रुपये से अधिक है। यद्यपि माही सिंचित क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के कारण से आर्थिक विकास हुआ है, लेकिन तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर के कारण प्रतिमाह प्रतिव्यक्ति आय अधिक नहीं हो पा रही है। वर्तमान समय में भी गरीब जनजाति व्यक्ति सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करने के लिए सेठ साहुकारों से 5 रुपये प्रति सैकड़ा प्रतिमाह के ब्याज के हिसाब से कर्ज लेते है अर्थात 60% वार्षिक ब्याज के हिसाब से कर्ज लेते है। यही कारण है कि गरीब जनजाति व्यक्ति निरंतर गरीब होता जा रहा है।

जीवन स्तर

एक व्यक्ति के जीवन स्तर का निर्धारण उसके द्वारा उपभोग किये जाने वाले पदार्थो के गुण एवं मात्रा के द्वारा किया जा जाता है। भील जनजाति के व्यक्तियों के जीवन स्तर का निर्धारण करने के लिए चयनित 1000 जनजाति परिवारों की व्यावसायिक सरंचना तथा एक माह में विभिन्न मदों पर किये जाने वाले खर्चे के द्वारा किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि 76.9 प्रतिशत जनजाति परिवारों का जीवन स्तर निम्न है। जनजाति व्यक्ति भोजन में गेहू, मक्का, उड़द की दाल एवं रबड़ी का प्रयोग अधिक करता है। सब्जी में तेल का प्रयोग कम तथा मिर्ची एवं नमक का प्रयोग अधिक करता है।

सारणी 4.3
भील जनजाति परिवार द्वारा विभिन्न मदों पर किया जाने वाला खर्चा (2018–19)
(चयनित 1000 ग्रामीण जनजाति परिवारों के आधार पर)

क्र.सं.	मद का प्रकार	कुल खर्चे का प्रतिशत
1	भोजन	36.4
2	वस्त्र	12.8
3	ईधन एवं बिजली	3.2
4	स्वास्थ्य	5.9
5.	शिक्षा	8.6
6	शराब	1.7
7	समाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों	18.8
9	अन्य	12.6
	कुल	100%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, जून 2018 से दिसम्बर 2019 तक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनजाति व्यक्ति 36.4% भोजन पर, 12.8% वस्त्र एवं 6.6% शिक्षा पर खर्चा करता है। माही सिंचित क्षेत्र में हो रहे आर्थिक एवं सामाजिक विकास के कारण जनजाति व्यक्ति कृषि एवं शिक्षा पर व्यय अधिक करने की प्रवृति विकसित हो रही है। बांसवाडा में जनजाति व्यक्ति शिक्षा एवं स्वस्थ्य पर कुल व्यय का 1% से भी कम व्यय करता था। (डॉ. आर.एन. मिश्रा द्वारा लिखित पुस्तक आदिवासी जीवन एवं अधिवास में सारणी क्रमांक 2.9 के आधार पर) वहीं वर्तमान में जनजाति व्यक्ति शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर 14.5% व्यय करता है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य उत्सवों पर कुल व्यय का 18.8 प्रतिशत करता है। विवाह, दापा, नातरा, नोतरा आदि में जनजाति व्यक्ति अधिक व्यय करता है। जनजाति व्यक्ति महुड़ी (देशी शराब) का प्रयोग करता है, लेकिन आर्थिक मजबूरी एवं जनजाति के भगत लोगों के कारण महुड़ी का प्रयोग कम हो रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

राजस्थान में आदिवासी समुदाय का सषक्तिकरण बांसवाडा जिले की भील जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक संरचनाऐं, परम्पराओं तथा नारी व आवासीय प्रारुप एवं स्वच्छता की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करना है, जो नियोजन के क्रमिक विकास, सामाजिक समानता को बढ़ावा, रोजगार वृद्धि, कृषि उत्पादन में वृद्धि, सामान्य एवं जनजाति व्यक्तियों के जीवन स्तर एवं आवासीय स्वच्छता, राजनीतिक सहभागिता में असमानता को कम करना तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं का विस्तार को शामिल करना है।

References

Books

Ackerma, E.A., (1959) "Population and Natural Resources" Chicago Univ. Press, Chicago.
Ashoka & Tripathi (1978) "Command Area Development in Mahi Kadana". Indian Institute of management, Ahmedabad.
Bhatt, L.S. (1976) "Micro Level Planning- A case study of Karnal area, Haryana". K.B. Publication, New Delhi.
Central Water Commission, New Delhi (1978) "Modernization of Irrigation System."
Dasgupta, S.P., (1976) "Atlas of forest resources of India." Resource Atlas Series, National Atlas organization Calcutta.
Doshi, J.K. (1974) 'Social structure and social change in a Bhil village.
Dosi, S.L. (2005) Indian Society : Structure and change.
G.S.I. (1976) "Atlas of Rajasthan, Geology and Minerals". Geological Survey of India, Jaipur.
Hashain, Nadeem (2002) Tribal India
Hussain, M. (2000) "Agriculture geography". Rawat Publication, Jaipur.
Hussain, M. (2000) "Human geography". Rawat Publication, Jaipur.
Mishra, R.N. (2002) "Tribal Life and Habitat (Economy and Society)" Ritu Publication, Jaipur.
Pandey, M.P. (1971) "The impact of irrigation on rural development". Concept Publishing Co. New Delhi.
Rathore, B.S. (1980) Resource inventory Banswara District.
Satpathy T. (1984) "Irrigation and economic development". Ashish Publishing House, New Delhi.
Sinha, B. & Bhatia, Ramesh (1984) "Economic appraisal of irrigation projects in India". Institute of economic growth, New Delhi.
Strahler Alan (2002) Science and system of the Human environment.

Journals

Annals of RGA Vol. XXIII, 2006 to Vol. XXXI 2014
Annal of NAGI Vol. XXX 2010 to Vol. XXXIV 2014
Amani, K.Z. (1970) "Agriculture and land use planning : A geographical interpretation" Agricultural situation in India Vol. XXV No. 1 p. 39.
Boyden, S. (1976) "Conceptual basis for the study of the ecology of human settlements" Nature and Resources. Vol. XII No. 3 July- Sept.
Centre for Tribal Development, M.L. Verma Tribal Research and Training Institution, Udaipur- Journal "Tribe"- Specific volume from 1966 to present time.
Hall, R.B. (1935) "The Geographic Regions: A resume" Annals association of American geographer. Vol. XXV, p. 122
Hussain, Hyder (1950) "Influence of Geographical environment on culture." The Geographer (Aligarh) Vol. 2.
Juger, Heunrich (1981) "New dams-Key to modern agriculture" Applied geog. & Development. Vol. XVII, p. 7-16
Journal of Asia Vol. XII (2012) to Vol. XIV, (2014)
Journal of Global Resources vol-I (2015) to Vol III (2016)
Kayastha, S.L. (1965) "Growth of Tribal economy and impact of Modern economic developments on tribal economy and society in sonpur Region. "NGJI Banaras. Vol. II

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

Nigam, R.K. (1966) "Genesis and racial traits of the Bhils" NGJI Vol. XII

Valkenbury, S.V. (1950) "The world land use survey" Economic Geog. Vol. 26, No. 1, p. 1-5.

Verma, C.V.J. "Water for human needs" Volume II organized by the international water resources association.

अंत टिप्पणी

1. *Symington 1938*
2. *गणेश लाल निनामा 'वागड़ के जनजातीय जीवन की लोक सांस्कृतिक परम्पराएँ' प्रकाशित शोध ग्रन्थ पृ. 20*
3. *S.C. Doshi, 'Indian Society : Structure and Change'*
4. *डॉ. हरिशचन्द्र उत्प्रेती 'भारतीय जनजातियाँ' पृ. 115*
5. *गणेश लाल निनामा, 'वागड़ के जनजातीय जीवन की लोक सांस्कृतिक परम्पराएँ' प्रकाषित शोध ग्रन्थ पृ. 25*